Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 12, (2017) 77-80

अकबरकालीन इतिहास लेखकों अबुलफज़्ल एवं अब्दुल कादिर बदायूँनी की कृतियों में निहित आत्मनिष्ठ एवं अभिलाषाजन्य तत्वों का परीक्षणः एक समालोचना

एस.ए.एच.ज़ैदी[1*] एवं रेहाना ज़ैदी[1]

[1]इतिहास विभाग, हे0न0ब0गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर, पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

*Corresponding Author Email: syedashrafzaidi@gmail.com

Received: 06.06.2017; Revised: 15.08.2017; Accepted: 19.10.2017
©Society for Himalayan Action Research and Development

सारांश :
यद्यपि समकालीन इतिहास लेखकों की कृतियों एवं अनुवादों की उपलब्धता ने मध्यकालीन भारतीय इतिहास के अध्ययन–अध्यापन को सरल बना दिया है,परन्तु अध्ययन–अध्यापन एवं शोध के लिए उन समकालीन इतिहास लेखकों की कृतियों का दोहन करते समय अध्येताओं को इस बात का ध्यान रखना आवष्यक है कि वह जिन समकालीन इतिहास लेखकों की कृतियों का उपयोग अध्ययन स्त्रोतों के रूप में कर रहें,उन समकालीन इतिहास लखेकों की कृतियों में उनके स्वयं क` अभिलाषाजन्य तत्व कितनी गहराई तक समाहित हैं? उन्होंने जो लिखा है,वह वास्तव में घटित हुआ भी था या फिर उन्होंने वह लिखा है,जो वह चाहते थे कि घटित हो? अथवा उन्होंने वह लिखा है,जो उनके आश्रयदाता चाहते थे? यह प्रश्न भी विचारणीय है कि यदि उन लेखकों ने अपने नायकों/आश्रयदाताओं को महिमामंडित करने के उद्देश्य से अपना लेखन कार्य किया है,तो उसमें निहित उनके स्वलाभ क्या थे और उन्हें क्या परितोषिक मिले और यदि उन्होंने उन समकालीन नायकों/शासकों की आलोचना की है,तो उनके आक्रोश और उसके फलस्वरूप लिखित उस प्रतिशोधपूर्ण लेखन के क्या कारण थे? उक्त संदर्भ में प्रस्तुत शोध–आलेख में मुग़ल सम्राट अकबर के दौर के दो प्रमुख इतिहासकारों–अबुलफज़्ल अल्लामी,जो अकबर को महिमामंडित करने के लिए प्रसिद्ध है और दूसरा अब्दुल कादिर बदायूँनी,जो अकबर के कटु आलोचक के रूप में जाना जाता है, के इतिहास लेखन में निहित उनके अभिलाषाजन्य तत्वों का परीक्षण किया गया है।

कुंजी शब्द : अकबरकालीन इतिहासकारों अबुलफज़्ल और बदायूँनी के इतिहास लेखन का परीक्षण।

प्रस्तावना

मध्यकालीन भारत के समस्त समकालीन इतिहास लेंखकों की कृतियों में निहित उनके आत्मनिष्ठ और अभिलाषाजन्य तत्वों को परीक्षण एक ही शोधपत्र में करना सम्भव नही है। अतः हम यहाँ मुग़लकाल के सर्वाधिक प्रख्यात दो इतिहास लेखकों – अबुलफज़्ल तथा अब्दुल क़ादिर बदायूँनी के इतिहास लेखन का परीक्षण कर रहे हैं, जो समकालीन होने के साथ–साथ परस्पर विरोधी विचाराधारा के भी थे। अबुलफज़्ल एक महान इतिहास लेखक के रूप में प्रख्यात है। उसने अपनी सुप्रसिद्व कृति ''अकबरनामा' को अन्तिम रूप देने से पहले पांच बार उसे लिखा था।[1] उसने प्रत्येक बार कुछ न कुछ संशोधन किये तथा सम्भवतः कुछ लोगों के सुझावों को भी अंगीकार किया,परन्तु अन्य इतिहाकारों की भांति अबुलफज़्ल भी एक सरकारी इतिहास लेखक था। उसकी यह निष्ठा कि ''शासकों की ताबेदारी करना और उनकी उपलब्धियों को अंकित करना खुदा की इबादत के समान है' निश्चित ही उसके लेखन पर प्रभावी रही। अतः
दरबारी इतिहासकार होने के नाते उसने अपने लेखन में अकबर की नीतियों का समर्थन किया तथा अकबर का महिमामडंन किया। अपने नायक अकबर को एक पूर्ण मनुष्य और एक आदर्श सम्राट दिखाने के जोश में अबुलफज़्ल उसके चरित्र और नीतिगत कई कमज़ोरियों को छिपा गया है।ऐसी स्थिति में उस पर पक्षपाती होने का आरोप लगना स्वाभाविक ही है। यहाँ एन0ए0 सिद्दीकी की यह टिप्पणी सार्थक है कि ''अबलु फज़्ल ने इतिहाकार के फ़र्ज़ को पूरा नहीं किया। इसकी अनेक मिसालें दी जा सकती हैं। उदाहरण के लिए शेरशाह सम्बन्धी विवरणों को लें। अबुलफ़ज़्ल ने शेरशाह की उपलब्धियों को घटा कर दिखाया है तथा उसकी कामयाबी का कारण धोखाधड़ी बताया है। उसने शेरशाह के कुछ सुधारों को छोटा बना कर दिखाने का प्रयास किया है

और यह कह कर उनका महत्व कम करने का प्रयास किया है कि वह सुधार तो पूर्व में अलाउद्दीन ख़िल्जी या बंगाल के शासकों द्वारा किये गये थ।[3] वास्तव में अबुलफज़्ल की अभिलाषा थी कि उसका नायक (अकबर) सभी शासकों से ऊँचा, प्रबुद्व और एक आदर्श शासक के रूप में दिखाई देना चाहिए। इसीलिए उसने अपने इतिहास लेख में यह हथकंडे अपनाये हैं,जो उसकी निष्पक्षता पर प्रश्नचिह्न लगा देते हैं। अबुलफज़्ल ने अपने लेखन में समकालीन मुल्ला वर्ग को स्वार्थी, अविवेकी एवं रूढ़िवादी क्यों दिखाया है? और वह क्यों चाहता था कि अकबर उलेमा वर्ग को दरकिनार करके हाशिये पर डाल दे? वास्तव में उसकी इस अभिलाषा का कारण उलेमा वर्ग के प्रति उसके व्यक्तिगत प्रतिशोध की भावना थी। शक्तिशाली और कट्टर उलेमा वर्ग के हाथों अबुलफज़्ल के परिवार का लगभग 20 वर्ष तक उत्पीड़न हुआ था,जिससे उसके परिवार को दुखी होकर ख़ानाबदोषों का जीवन जीना पड़ा।[4] अन्ततः अकबर का दरबारी बन जाने के बाद (सन्1574) में ही उसके परिवार का यह संकट समाप्त हुआ। कट्टर मुल्लाओं द्वारा किये गये व्यवहार ने अबुलफज़्ल और उसके भाई फ़ैजी को उलेमाओं का षत्रु बना दिया। दोनों भाइयों ने अपने व्यापक ज्ञान के सहारे उलेमाओं को अकबर के स्वतन्त्र चिन्तन को अपनी तार्किक बुद्धि और राजा के दैवीय अधिकार के सिद्धात के आधार पर औचित्यपूर्ण तथा स्वीकार्य बनाया।

अकबर स्वयं कट्टर उलेमाओं की शक्ति एवं उनकी जनता में प्रभावपूर्ण स्थिति के कारण बेचैन था और उनके प्रभाव से मुक्त होना चाहता था। यह वही उलेमा वर्ग था, जिसके अड़ियल व्यवहार से दुखी होकर शेरशाह ने कहा था कि ''इन मुल्लों की हरकतों से मेरा दिल टुकड़े–टुकड़े हो जाता है। मेरा बस चले तो मै इन्हे फांसी पर चढ़ा दूँ''।[5] चूँकि अबुलफज़्ल स्वयं कट्टर उलेमाओं का विरोधी था। अतः उसने उनके प्रति अकबर के असंतोष का लाभ उठाने के लिए बुद्धि तथा धार्मिक सहिष्णुता का पक्ष लिया।उसने उलेमाओं को बाध्य कर दिया कि वह अकबर को सांसारिक विषयों के साथ–साथ आध्यात्मिक विषयों में भी अन्तिम निर्णायक (मुज्तहिदध्इमामे आदिल) मानें। कट्टर उलेमाओं को पदों और प्रभुत्व से वंचित कराके अबुलफज़्ल ने अपनी अभिलाषा पूरी की। इसके लिए अबुलफज़्ल ने राजा के देवी अधिकार के सिद्धांत का सहारा लिया। उसने सम्राट अकबर को ईश्वर से निकलने वाला प्रकाश बताया और अकबर को ईश्वर की प्रतिछाया (ज़िल्लेइलाही) के रूप में प्रस्थापित करने के लिए अपनी सम्पूर्ण बौद्धिक और तार्किक शक्ति लगा दी।[6]

अबुलफज़्ल के इन अभिलाषाजन्य कार्यो और प्रयासों की व्यापक प्रतिक्रिया भी हुई। उस पर जनता को धर्मविमखु करने, सम्राट को गुमराह करने और नुक्तिवी हो जाने का आरोप भी लगाया[7], परन्तु इन आरोपों ने अबुलफज़्ल को और अधिक मुक्त चिंतक तथा धर्म के मामले में और अधिक उदार बना दिया। फलतः इतिहास के बारे में उसका दृष्टिकोण पूर्ववर्ती इतिहास लेखकों से भिन्न हो गया ।उसने पूर्ववर्ती इतिहास लेखकों को चुनौती दे डाली और घोषणा कर दी कि पहले लिखे गये इतिहास में अनेक दोष हैं। वे ऐसे स्वार्थी और लालची व्यक्तियों द्वारा लिखे गये हैं, जिन्होंने अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए गलत वक्तव्यों को दर्ज किया और सत्य तथा असत्य का मिश्रण प्रस्तुत किया।[8] पूर्ववर्ती इतिहास लेखकों को महत्वहीन और संर्कीण विचाराधारा का सिद्ध करने की इच्छा ने अबुलफज़्ल को इतिहास को बुद्धिसंगत और प्रमाणिक बनाने के लिए प्रेरित किया, लेकिन इस बुद्धिवादी संघर्ष में वह आम आदमी और उसको अपने लेखन में सम्मिलित करने से चूक गया, जिसमें वह स्वयं जी रहा था। एन0ए0 सिद्दीकी का यह कटाक्ष उचित ही है कि ''अकबरनामा अकबर की कहानी अधिक है और उस युग की कम जिसमें अकबर और अबुलफज़्ल दोनों सांसे ले रहे थे।[9] अबुलफज़्ल के लेखन में अकबर की प्रधानता होना स्वाभाविक था, क्योंकि वह अकबर के आदर्श और महान व्यक्तित्व की आढ़ में सरलता से अभिलाषाजन्य इतिहास लेखन कर सकता था।

जहाँ एक ओर अबुलफज़्ल अकबर की महिमामंडन के लिए जाना जाता है,वहीं दूसरी ओर उसका समकालीन इतिहास लेखक अब्दुल क़ादिर बदायूँनी अकबर की आलोचना के लिए प्रसिद्ध है। जिस प्रकार अबुलफज़्ल के इतिहास लेखन में भी उसके अभिलाषाजन्य तत्व निहित है। बदायूँनी इस बात पर गर्व करता है कि ''उसकी यह मूल्यवान कृति (मुन्तख़ब–उत–तवारीख़) यह सिद्ध करने में सफल होगी कि उन लोगों के विरोध में जिन्होंने सांसारिक लोभ में पड़ कर (निष्चित ही उसका इशारा अकबर और अबुलफज़्ल की ओर है) नास्तिकता का गुणगान किया है,सच्चाई केवल सच्चे मुसलमान की पक्षधर हागे ी।[10] बदायूँनी अपनी कृति उन लोगों के लिए नहीं मानता था, जो शरा (इस्लामी कानूनों)का उल्लंघन करते हैं।[11]

इस प्रकार बदायूँनी न केवल अपने लेखन की अभिलाषा को स्पष्ट कर देता है, बल्कि उसका अध्ययन करने वालों का दायरा भी निर्धारित कर देता है। उसके लेखन में उसके आत्मनिष्ठ तथ्य इस कारण से भी स्पश्ट होते है कि वह प्रत्येक पात्र को केवल इस कसौटी पर कसता है कि वह शरियत का कितना पालन करता है? इसी आधार पर वह उस

पात्र का मूल्याँकन भी करता है।[12] बदायूँनी के इस अभिलाषाजन्य लखेन के सन्दर्भ में एस0ए0ए0 रिज़वी की यह टिप्पणी सार्थक है कि ''बदायूँनी ने इस्लाम के हित पर ध्यान रखते हुए अपने ग्रन्थ की रचना की थी।'' बदायूँनी यद्यपि अकबर के काल में धामिर्क नियमों में उथल–पुथल की बात करता है,परन्तु वह उस उथल–पुथल का क्रमवार ब्यौरा लिखने से बचता है, क्योंकि ऐसा करने पर उसे कार्य–कारण में सम्बन्ध बताना पड़ता और उस धार्मिक उथल–पुथल की व्याख्या करने के साथ ही उसे प्रबल साक्ष्य भी देने पड़ते,जो शायद उसके लिए सम्भव नहीं होते। इसलिए उसने उस धार्मिक उथल–पुथल के दोषी अकबर के उन सब कार्यो को, जिन्हे ं वह धर्म विरुद्ध समझता था,एक साथ जोड़कर लिखने का और अपनी बात को प्रभावी बनाने का प्रयास किया है।[13]

जो अध्येता अकबर की धामिर्क नीति की विवेचना के लिए बदायूँनी की इस कृति को आधार बनाते हैं, उन्हें यह बात ध्यान में रखनी चाहिए की बदायूँनी ने अपने इस ग्रन्थ की रचना प्रतिशोध की भावना से की है। वह आध्यात्मिक क्षेत्र में अकबर द्वारा किये जा रहे नवीन प्रयोगों को उस समय की आवश्यकताओं के सन्दर्भ मेंन देखकर केवल उन्हें विधर्मी कार्रवाइयों के रूप में देखता था। लेकिन चूँकि रोज़ी–रोटी के लिए वह अकबर की नौकरी (दरबारी सेवा) पर आश्रित था और प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया व्यक्त करके उन सुख–सुविधाओं से वंचित नहीं होना चाहता था,जो उसे सरकार की ओर से प्राप्त थीं। अतः उसने अपने ग्रन्थ मुन्तख़ब–उत–तवारीख़ की रचना छिपा कर की और उसमें अपना रोष प्रकट किया।

बदायूँनी के इस प्रतिशोधपूर्ण लेखन के लिए उसकी धार्मिक आस्था ही कारण नहीं थी। उसने दरबारी जीवन के आरम्भ में कट्टर मुल्लाओं का जिस प्रखता एवं तर्कपूर्ण बहस से उत्तर दिया था, उसके लिए अकबर ने उसे पुरस्कृत एवं सम्मानित भी किया और उसे एक बड़ी जागीर मदद–ए–माश के रूप में प्रदान की थी। परन्तु जैसे–जैसे उसका समकालीन अबुलफ़ज्ल प्रभावशाली होता गया बदायूँनी अपने को उपेक्षित अनुभव करने लगा। उसके प्रतिद्वन्द्वि अबुलफ़ज्ल के प्रभाव, मनसब,पद और सम्मान में तो उत्तरोत्तर वृद्धि होती गई, जबकि स्वयं उसकी जागीर में कटौती हो गई। अबुलफज़्ल तो वज़ीर (प्रधानमन्त्री)बन गया और बदायूँनी को मुख्य रूप से संस्कृत ग्रन्थों के अनुवाद करने के नीरस कार्य तक ही सीमित रखा गया।

उक्त कारणों से बदायूँनी अकबर एवं अबुलफज़्ल का विरोधी बनता चला गया।उसने बार–बार दरबार से लम्बी छुट्टी लेना आरम्भ कर दिया। बदायूँनी के असन्तोष और प्रतिक्रिया का विस्फोट अन्ततः ग्रन्थ मुन्तख़ब–उत–तवारीख़ में हुआ।[14] जो विद्वान बदायूँनी के लेखन को एक स्वतन्त्र लेखन मानते हैं, वह इस तथ्य को भूल जाते हैं कि बदायूँनी ने इस ग्रन्थ का लेखन प्रतिशोधपूर्ण अभिलाषा और इस परिकल्पना के तहत किया कि अकबर के कार्य और नीतियों को धर्म विरूद्ध सिद्ध किया जा सके। किसी परिकल्पना के तहत किया गया लेखन स्वतन्त्र लेखन नहीं हो सकता, क्योंकि ऐसे लेखन में लेखक के मन में पहले से ही निश्चित रहता है कि उसे क्या लिखना है? आरै क्या सिद्ध करना है? बदायूँनी के लेखन का यही सबसे बड़ा दोष है,जो पाठकों को दिग्भ्रमित करता है।

निष्कर्ष :

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अकबरकालीन इन दोनों सुप्रिसिद्ध इतिहास लेखकों के इतिहास लेखन में जहाँ एक ओर समकालीन इतिहास की अनेक महत्वपूर्ण सूचनायें दर्ज हैं,वहीं उनके इतिहास लेखन में उनके स्वयं के अभिलाषाजन्य एवं आत्मनिश्ठ तत्व भी समाहित हैं। अतः इतिहास के प्रत्येक सजग अध्येता को अकबरकालीन इन दोनों इतिहास लेखकों के इतिहास लेखन के उद्देश्यों एवं इनकी मनोदशा को ध्यान में रखते हुए ही इनकी कृतियों का उपयोग–उपभोग करना चाहिए, क्योंकि वास्तव में इतिहासकार के सम्मुख सिद्धान्त होना चाहिए न कि परिकल्पना। किसी परिकल्पना के तहत किया गया लेखन निष्पक्ष लेखन नहीं हो सकता, क्योंकि ऐसे लेखन में लेखक के मन में पहले स` ही यह निश्चित रहता है कि उस` उसे क्या लिखना है और क्या सिद्ध करना है। उक्त दोनों इतिहास लेखकों के इतिहास लेखन के यही प्रमुख दोष हैं,जो सामान्य पाठकों को दिग्भ्रमित कर सकते हैं।

संदर्भः

1–3.सिद्दीकि, नोमान अहमद, शोध–आलेख,''शैख़ अबुलफज़्ल'', मध्यकालीन भारत, सं0 हबीब,इरफान,पृ092,93,97,अंक–4, दिल्ली,1992।

4.नूरुल हसन, सैयद, शोध–आलेख,''अकबर के शासनकाल का महज़र'',मध्यकालीन भारत,वही,पृ0 81(संदर्भ संख्या–81)।

5.सिद्दीकि, नोमान अहमद, वही, उपर्युक्त,पृ0 84–85।

6.सिद्दीकि,नोमान अहमद,वही,उपर्युक्त,पृ0 86,89।.''नुक्तिवी'' से तात्पर्य ऐसे लोगों से है, जो इसी संसार को शाश्वत समझते हैं। क्यामत(प्रलय) तथा यौमउद्दीन(ईश्वर द्वारा किये जाने वाले अन्तिम न्याय के दिन) में विश्वास नहीं रखते हैं। इसी संसार में प्राप्त हुई ख़ुशहाली अथवा बदहाली को स्वर्ग तथा नरक बतलाते हैं।
7–9.सक्सैना, आर0के0, मुग़लकालीन इतिहासकार व इतिहास लेखन,पृ0 72,जयपुर,1987।
10.रिज़वी, एस.एस.ए,मुग़लकालीन भारत,भाग 2,पृ0 27 (समीक्षा),
11.सक्सैना, आर.के., वही, उपर्युक्त,पृ0 74।
12.सिद्दीकि, नोमान अहमद, वही, उपर्युक्त,पृ0 86,97।
13.सिद्दीकि, नोमान अहमद, वही, उपर्युक्त,पृ0 86–87।
14.अब्बास, फौज़िया ज़रीन कृत ''अब्दुल कादिर बदायूँनी,पृ0 48,55,56,192 एवं 195,दिल्ली,1987।

****